Poonam Shodh Rachna (ISSN 2456-5563)
(A Multidisciplinary, Peer Reviewed And Refereed Journal)
Vol.3, Issue.IX, September 2024, Pc: PSR-2409007

नारी सशक्तिकरण की संकल्पना एवं धरातलीय यथार्थ : आत्मवृत्तान्तमक अध्ययन

नीतू यादव
पीएच.डी. शोध छात्रा, के.शि.सं., शिक्षा विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय

शोध-सार

प्रस्तुत शोधकार्य निरंतर बदलते समाज सांस्कृतिक व शैक्षिक संदर्भ में वयस्क, विवाहित, कामकाजी और उच्च शिक्षित महिलाओं के दैनिक-अनुभवों और आत्मवृत्तांतों के माध्यम से, नारी-सशक्तिकरण की गत्यात्मक, सापेक्षिक, उदीयमान संकल्पनाओं और आशयों को समझने का प्रयास है। जिसके लिए दिल्ली राज्य राजधानी क्षेत्र की कुल आठ विवाहित, वयस्क *(35+),* उच्च शिक्षित *(*परास्नातक*),* कामकाजी महिलाओं के दैनिक जीवन अनुभवों *(*आरंभ से वर्तमान*)* को उनके आत्मवृत्तांतों के रूप में प्रत्यक्ष साक्षात्कार के माध्यम से एकत्र किया गया। परिणामस्वरूप पाया गया कि नारी सशक्तिकरण की आरंभिक अवधारणाओंनुरूप ही इन्होंने परंपरागत जेंडर विभाजित सामाजीकरण व बाधाओं के बावजूद शैक्षिक-आर्थिक सबलता से अपनी नवीन अस्मिताएँ गढ़ी हैं, जिसमें शिक्षा ने विशेष भूमिका निभाई है। लेकिन अब भी पुरुष-प्रधान मानसिकता वाले पारिवारिक-सामाजिक संदर्भ से उन्हें पर घर-बाहर के दोहरे दबाव, तनाव, दुविधा व संतुलन समस्याओं से जूझना पड़ रहा है। इनके साथ ही कुछ आशावादी परिवर्तन भी यहाँ सापेक्षिक रूप से परिवार, समाज व पुरुषों में दिखाई देते हैं, जिससे नारी-सशक्तिकरण की अवधारणा सकारात्मकता की ओर अग्रसर दिखाई देती है। अत: अध्ययन आधार पर यह संस्तुति की जाती है कि स्त्री-सशक्तिकरण की अवधारणा केवल आर्थिक या शैक्षिक रूप से सक्षम होने या अवसरों की समानता तक ही संकुचित नहीं रही है, बल्कि जरूरी है कि इसे स्त्री के समग्र दृष्टिकोण व जीवन अनुभवों के संदर्भ में पुनर्विश्लेषित किया जाए.

प्रमुख संकेत शब्द – नारी सशक्तिकरण , कामकाजी- शिक्षित महिलाएं , आत्मवृतान्त, जीवन अनुभव।

प्रस्तावना

नारी सशक्तिकरण की प्रचलित अवधारणा के अंतर्गत स्त्री-शिक्षा एवं करियर को सदैव ही महत्त्वपूर्ण रूप में देखा गया है। जो स्त्री के जीवन मार्गदर्शन, आत्मनिर्भरता एवं दशा में बदलाव लाने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। पर विगत दशकों में प्रचलित इन अवधारणाओं के सतत् विश्लेषणात्मक अध्ययनों से यह भी स्पष्ट होता है कि नारी-सशक्तिकरण केवल शिक्षा, रोजगार, संसाधनों या अवसरों की समानता तक ही सीमित नहीं है, अपितु अपने व्यापक अर्थों में यह समाज-सांस्कृतिक आर्थिक एवं राजनैतिक सभी पहलुओं समेत शक्ति संबंधों, अवसरों की प्रचुरता एवं उपलब्धता, नियंत्रण कारकों एवं स्त्री के शारीरिक-मानसिक दशा एवं स्थिति आदि को भी व्यक्त करता है (कार्नवाल, 2016; बाटलीवाला, 1994; कबीर, 1999, 2001)। जिसके फलस्वरूप इसे एक उत्पाद के तौर पर नहीं बल्कि लचीली, गत्यात्मक 'प्रक्रिया' के तौर पर देखने का चलन बढ़ा है (कॉर्नेल, 2016)। अत: निरंतर बदलते समाज-सांस्कृतिक एंव शैक्षिक संदर्भ में 'नारी-सशक्तिकरण की अवधारणा में आए बदलावों को भी वर्तमान, तात्कालिक समाज के यथार्थ अनुभवोंनुरूप समझने की नितान्त आवश्यकता है। विशेषत: भारतीय परिवेश में जहाँ अब भी स्त्री, पुरुष के सापेक्ष द्वितीयक अवस्था में ही निरूपित होती है और मुख्य प्रभाव, अधिकार एवं शक्ति 'पुरुषों' के ही वर्चस्व क्षेत्र समझे जाते हैं (नायक एवं महन्ता, 2007; हजारिका, 2011)। ऐसे में यह जानना स्वाभाविक है कि, क्या बढ़ती शिक्षा, रोजगार दर एवं अवसरों की समानता व नियंत्रण मात्र ही स्त्री-सशक्तिकरण के मुख्य द्योतक हैं? अथवा स्त्री-पुरुष की समकक्ष व समान रूप से विवेचना में अब भी कुछ शेष है? इन्हीं प्रश्नों के अंतर्गत प्रस्तुत शोध कार्य शिक्षित-कामकाजी एवं विवाहित महिलाओं के आत्मवृत्तांतों (नैरेटिव) द्वारा 'नारी-सशक्तिकरण' के धरातलीय यथार्थ को समझने का प्रयास है।

नारी सशक्तिकरण की उभरती अवधारणा : एक संक्षिप्त विश्लेषण

नारी-सशक्तिकरण की अवधारणा विगत कई दशकों से गत्यात्मक तौर पर नए आयामों को समाहित करते हुए उभरी है। जहाँ 1970 के दशक में नारीवादी प्रयासों ने नारीवादी अवचेतना को बढ़ाने पर बल दिया, वहीं 1980-90 का दशक आते-आते रेडिकल उपागमों के फलस्वरूप स्त्री-पुरुष के मध्य वृहद समानता और स्त्री अधिकारों के पक्ष में शक्ति संबंधी के रूपांतरण के प्रति विशेष चिंता जताई गई (बाटलीवाला,1994, 2007; कॉर्नवाल, 2016)। फिर, कालान्तर में कुछ समकालीन नारी सशक्तिकरण समालोचकों ने इसके संक्षिप्त व्याख्या के अन्तर्गत शक्ति को विभिन्न भौतिक वस्तुओं, बौद्धिक संसाधनों व विचारों पर नियंत्रण के तौर पर परिभाषित करने का यत्न किया (बाटलीवाला, 1994)। जिसके तहत मुख्य केन्द्र बिन्दुओं में संसाधनों (भौतिक, मानसिक, आर्थिक एवं मानवीय आदि), तथा विचारों (विश्वास, मूल्य, मनोवृत्ति आदि) पर पूर्ण नियंत्रण को भी प्रमुखता से शामिल किया गया । यानि शक्ति से आशय यदि नियंत्रण है तो सशक्तिकरण फिर 'नियंत्रण की प्रक्रिया के तौर पर देखी जा सकती है। पर नारी सशक्तिकरण अपनी व्यापक स्वरूप में नियंत्रण से कहीं ज्यादा है (कबीर, 1999, 2001; बाटलीवाला, 1994; कोले एवं अन्य,

2021; कोचलर एवं राव, 2015)। जो एक सामूहिक क्रियाकलाप के तौर पर 'पावर विद'के साथ 'पॉवर विद्इन' के विकास से होते हुए 'पॉवर' की 'समग्र प्रक्रिया' पर ध्यान केन्द्रित करता है (रोलैण्ड्स, 1997)। जो मूलभूत रूप से शक्ति-संबंधों में परिवर्तन की सतत् प्रक्रिया और परिवर्तन को दर्शाता है (सेन, 1997)। अत: जरूरी है कि नारी सशक्तिकरण को अंतिम उत्पाद या परिणाम के बजाय एक 'प्रक्रिया' के तौर पर विवेचित किया जाए। जिनके फलस्वरूप स्त्री स्वयं के विषय में, अपनी परिस्थितियों, सामाजिक संसार, संबंधों और क्षितिज के विषय में विशिष्ट तरीके से विचार कर पाती है। (कार्नेल, 2016)।

अवधारणात्मक रूपरेखा

नारी-सशक्तिकरण की गत्यात्मक, उद्विकासीय संकल्पना की उपरोक्त विवेचना से यह स्पष्ट है कि सशक्तिकरण एक जटिल प्रक्रिया है, जिसके लिए तीव्र, आसान हल (शिक्षा, नौकरी, अवसर, समानता) और परंपरागत सुविधाओं से अलग, स्त्री जीवन में महत्त्वपूर्ण बदलाव आए हैं। अत: जरूरी है कि परिवर्तित होते समाज सांस्कृतिक संदर्भ में शिक्षित-कामकाजी महिलाओं के जीवन अनुभवों की गहनता से पड़ताल की जाए (कोले, शेषाद्री एवं अन्य, 2021; कोचलर एवं राव, 2015; कोर्नवाल, 2016; कबीर, 2001)।

जैसा कि तात्कालिक समाज सन्दर्भ में नारी सशक्तिकरण की अवधारणात्मक विकास का अध्ययन करते हुए कोले,शेषाद्री एवं अन्य (2021) 'स्त्री-सशक्तिकरण की एक विस्तृत रूपरेखा के अन्तर्गत परिवर्तन के सभी संभाव्य आयामों को समाहित करते हुए इसमें व्यक्तिगत परिवर्तन के साथ ही संस्थागत बदलावों, औपचारिक व अनौपचारिक बदलावों को भी शामिल करने की संस्तुति करते हैं (कोचलर, राव व अन्य, 2021)। क्योंकि यह सभी आयाम - स्त्री-पुरुष अवचेतना, स्त्री के संसाधन व अवसरों पर अधिकार, औपचारिक-सांस्कृतिक मानवीय क्रियाकलाप एवं नीतियाँ व कानून आदिआपस में अंर्तसंबंधित एवं अंर्तगुंथित हैं (कोले, शेषाद्रीएवं अन्य, 2021)

अत: प्रस्तुत शोधकार्य के लिए उपरोक्त रूपरेखा को आधार रूप में शिक्षित-कामकाजी महिलाओं के संदर्भ में 'नारी सशक्तिकरण' की यथार्थ-विवेचना के लिए अपनाया गया है। जिसके द्वारा उनके दैनिक-जीवन-अनुभवों की वास्तविक विवेचना की जा सके और आए बदलावों को समस्तसमेकित रूप में समझा जा सके।

शोध उद्देश्य

1. नारी सशक्तिकरण को शिक्षित कामकाजी महिलाओं के आरंभिक जीवन-अनुभवों के संदर्भ में समझना।
2. नारी-सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका स्वयं उनके शब्दों में समझना।
3. वर्तमान दोहरे जीवन शैली (घरेलू एवं कामकाजी) को उनके दैनिक जीवन अनुभवों, संघर्षों, दुविधा व विरोधाभासों के संदर्भ में समझना।
4. नारी सशक्तिकरण के प्रभावों को समाज, जीवन साथी एवं पीढ़ीगत मानसिकता एवं व्यवहार के परिवर्तनों के संबंधों में समझना।

प्रविधिशास्त्र

शोधकार्य हेतु गुणात्मक शोध के लिए केस अध्ययन उपागम के तहत आत्मवृत्तांतों (नैरेटिव) को जीवन-अनुभवों के संग्रहण हेतु प्रयोग किया गया। साथ ही, मुख्य निदर्शन के तौर पर दिल्ली राज्य एवं राजधानी क्षेत्र के विविध सरकारी, गैर सरकारी या स्वरोजगाररत, कामकाजी एवं 35 वर्ष से अधिक, न्यूनतम परास्नातक, मध्यमवर्गीय एवं विवाहित कुल आठ महिलाओं को सोद्देश्यपूर्ण निदर्शन चयन द्वारा चयनित किया गया। जिनसे थीम आधारित प्रश्नावली द्वारा प्रत्यक्ष साक्षात्कार के माध्यम से आत्मवृत्तांतों (नैरेटिव) को एकत्र किया गया। जिनके विश्लेषणात्मक-व्याख्या द्वारा प्रमुख उदीयमान प्रभावी बिन्दुओं (थीम) की अन्य शोध-साहित्य के प्रकाश में परिणाम व निष्कर्ष की व्याख्या की गई।

विश्लेषणात्मक व्याख्या एवं उदीयमान विषय बिन्दु (थीम)

प्रति केसवार एवं समग्र केस विश्लेषणोपरांत उद्देश्यनुरूप प्रमुख प्रभावी विषय बिन्दु(थीम) अग्रवत रूप में प्राप्त हुए-

1. शैक्षिक-आर्थिक सबलता: सशक्तिकरण के आरंभिक आधार
2. नारी सशक्तिकरण में शिक्षा: मील का पत्थर
3. कामकाजी-शिक्षित महिला: दैनिक जीवन अनुभवों के धरातलीय यथार्थ
4. परिवार, समाज एवं पीढ़ीयों में दृष्टिगत परिवर्तन: नारी सशक्तिकरण के प्रभाव

विवेचनात्मक व्याख्या -

(क) शैक्षिक-आर्थिक सबलता : सशक्तिकरण के आरंभिक आधार

अध्ययन में यह प्रभावी रूप से पाया गया कि, यद्यपि तीन दशक पूर्व महिलाओं ने अपने आरंभिक जीवन, पालन-पोषण एवं सामाजीकरण में परंपरागत विचारधारानुरूप भेदभाव (लैंगिक), और शिक्षा व करियर के लिए संघर्ष का सामना किया है। पर उस समय में भी ये अपनी शिक्षा एवं करियर के प्रति पर्याप्त सजग थीं, जिसके कारण विपरीत पारिवारिक-सामाजिक परिस्थितियों और न्यूनतम संसाधनों में भी इन्होंने अपनी शिक्षा व करियर की प्राथमिकताएँ बनाए रखीं। चेष्टा,37 (एम.एन.सी., मैनेजर) के शब्दों में-

"परिवार में स्पष्ट कार्य-विभाजन (जेंडर आधारित) थे... पापा हम बहनों की शिक्षा को लेकर उतने सजग नहीं थे... वे इस मामले में थोड़े रूढ़िवादी और सख्त भी थे... लड़की की शिक्षा मतलब... 'स्कूल तक' बस... पर मुझे न, शुरू से ही था कि बस अच्छी ऊँची शिक्षा लेकर... किसी तरह वो ऑफिस वाली जॉब लेनी है (हंसती हैं)... बाधाएँ थी पर मैंने कर लिया... और आज यहाँ हूँ।"

इसी तरह समाज सांस्कृतिक भेदभाव को इंगित करते हुए डॉ. कीर्ति ,38 (गायनी, आर एम् एल हॉस्पिटल, दिल्ली) स्पष्ट करती हैं कि-

"हम बेहद न्यून आय वाले परिवार (चपरासी) से थे... पर मां-बाप ने शिक्षा और करियर के लिए बेहद साथ दिया है... बड़ी मेहनत की और करायी भी ... पर दूसरी बहुत बाधाएँ थी जैसे पापा का ट्रांसफर होना, माध्यम की समस्या... दूर स्कूल... संसाधनों की कमी ...पर जो सबसे परेशान करता, वह थी 'सोसायटी' (हंसती हैं)... क्या करेंगी लड़कियाँ पढ़कर... घर का काम सिखाओं... काम आएगा... पर हमने सिर्फ खुद पर विश्वास और फोकस किया ."

(ख) नारी सशक्तिकरण में शिक्षा: मील का पत्थर

आत्मवृत्तांतों के समग्र विश्लेषण में यह प्रभावी तौर पर पाया गया कि, स्त्री सशक्तिकरण हेतु आर्थिक-आत्मनिर्भरता, व्यक्तित्व विकास एवं आत्मविश्वास के लिए 'शिक्षा' सबसे महत्त्वपूर्ण कारक है। जो जीवन के सभी पहलुओं, अनुभवों को प्रभावित करने, अस्मिता निर्माण और आत्म-परिचय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जैसा कि प्रीती (37), अपने जीवन में शिक्षा के मूल्य को स्पष्ट करते हुए कहतीं हैं कि-

"मैं जो कुछ भी हूँ... वह सिर्फ शिक्षा की वजह से। इससे ही मैंने खुद की वैल्यू जानी है। यह शिक्षा ही है जो हमारी क्षमता, ताकतों, गुणों और... मूल्यों से मिलाती है... काम बनाती है... इसके बिना कुछ संभव ही नहीं था... ये तो माइंडसेट... यहाँ तक की दूसरों की सोच भी बदल सकती है।"

इसी तरह सरिता (35,प्राथमिक शिक्षिका ,दिल्ली) शिक्षा के महत्त्व के विषय में कहती है कि -

"बहुत सारी बाधाएँ थीं... पर इतना जरूर जानती थी कि कुछ करना या बनना है... तो बस ये होगा एजूकेशन से ही... इंडिपेंडेंट होने के लिए ये 'पॉवर-टूल' की तरह है।"

यह सभी शिक्षा को न केवल नारी सशक्तिकरण में सहायक बल्कि सामाजिक परिवर्तन में भी अहम् तौर पर व्यक्त करती है।

"अब हमारे गाँव, शहर, समाज में भी लोग अब लड़कियों की शिक्षा को महत्त्व दे रहे हैं... लड़कियों के करियर को महत्त्व दे रहे हैं... अब तो दूरस्थ पिछड़े क्षेत्रों में भी शैक्षिक संसाधन उपलब्ध है... यही शिक्षा की ताकत है।"(मीना, 43, विद्यालय प्रवक्ता,दिल्ली)

(ग) कामकाजी शिक्षित महिला: दैनिक अनुभवों के धरातलीय यथार्थ

उपरोक्त प्राप्त प्रमुख थीम से यह स्पष्ट है कि, नि:संदेह विगत दशकों के परंपरागत परिवार संरचना व सामाजीकरण के बावजूद स्त्रियों ने शिक्षा के आधार पर स्वयं को आर्थिक व व्यक्तिगत तौर पर सक्षम व सशक्त बनाया है। जिनके आधार पर वह ज्यादा स्वतंत्र व आत्मनिर्भर हुई है। पर अध्ययन में दैनिक जीवन अनुभवों के विश्लेषण से यह भी स्पष्ट होता है कि परंपरागत जटिलताओं (सामाजिक व पारिवारिक संरचनाओं) ने उन पर घर और कार्य के बीच लगातार संघर्ष, दोहरे दबाव और संतुलन संबंधी समस्याओं को भी उत्पन्न किया है, जो उनके मनोबल को क्षीण भी करते हैं। खासकर तब जब परिवार में स्पष्ट कार्य विभाजन (जेंडर आधारित) परंपरागत अपेक्षाएँ निहित हों, वहाँ कामकाजी-शिक्षित महिलाएँ कई तरह के शारीरिक-मानसिक तनाव व दबाव का अनुभव करती हैं। जिससे शिक्षा व करियर से उत्पन्न सशक्तीकरण पर भी प्रश्न उठते हैं। शिप्रा (37), के शब्दों में-

"हम केवल कमाते ही नहीं... गँवाते भी हैं।'... लोगों का कहना आसान होता है... भाई डबल इंकम है और क्या चाहिए... पर यहाँ डबल प्रेशर, थकान, दर्द भी है... वो बहुत कम लोग ही समझ पाते हैं... कभी-कभी लगता है वो रोल-सेट ही ठीक थे... ये प्रेशर तो नहीं रहता... कहाँ फंस गए (हंसतीं हैं)।

इसके साथ ही परिवार से मिलने वाला न्यून सहयोग, दुविधा व दबाव बढ़ाने में अहम कारक होता है ,जैसा कि डॉ. कीर्ती(38) ने बताया-

"आसान नहीं है... ठीक है हाउसहेल्प है... मेड है... परिवार सपोर्टिंग है पर माँ के लिए बच्चा प्रीयॉरिटी तो होता ही है... आप स्किप नहीं कर सकते... इस दोहरी जिम्मेदारी से कभी-कभी तो लगता है... घर-बाहर दोनो जगह सब डिस्बैलेंस्ड हो रखा है... पर क्या कर सकते हैं।"

(घ) परिवार-समाज एवं नारी सशक्तिकरण: कुछ आशावादी परिवर्तन

सभी केस अध्ययनों के विस्तृत विश्लेषण में यद्यपि यह पाया गया कि अनेक अध्ययन परिणामोंनुरूप ही इन कामकाजी-शिक्षित महिलाओं में तनाव, दबाव व दुविधाएँ व्याप्त हैं, परन्तु अध्ययन के समग्र विश्लेषण में यह भी सकारात्मक रूप में पाया गया कि विगत दशकों व पीढ़ियों की तुलना में वर्तमान परिवार, जीवन साथी, माता-पिता यहाँ तक कि भावी पीढ़ी (बच्चों) की सोच, व्यवहार और मानसिकता में भी बदलाव आए हैं, जो इन्हें (कामकाजी माँ, बहु, पत्नी आदि) समर्थन, सहयोग और साथ ही स्वीकृति प्रदान करता दिख रहा है। जिससे इनका आत्मविश्वास बढ़ा है और स्थिति में भी सुधार आया है। यहाँ सबसे महत्त्वपूर्ण रूप में

जीवनसाथी (पति) की भूमिका उभरकर आयी है, जो पत्नी के समानांतर अपनी भूमिका को रूपांतरित कर एक 'न्यू फादर', 'फादर एट होम' की भूमिका भी निभा रहा है और स्त्री के करियर व शिक्षा में भी सहयोगी और साथी सिद्ध हो रहा है-

''अब घर के काम करने में पुरुष संकोच या शर्म नहीं महसूस करते... चाहे बर्तन, कपड़े, सफाई, बच्चों की देखभाल जो भी हो... कुछेक समाज संदर्भों की रूढ़िवादिता छोड़ दें तो... शहरी क्षेत्रों में पुरुष यथा सामर्थ्य अपने पत्नी और परिवार का साथ दे रहे हैं... बिना इन भूमिका बदलावों के घर-बाहर का संतुलन मुश्किल है... वैसे भी एक पहिए का सर्कस ही होता है... गाड़ी नहीं (हंसती हैं) (मीना ,43)।

इसी तरह समाज की सोच में आए बदलाव को इंगित करते हुए चेष्टा (37) स्पष्ट करतीं हैं कि-

''... बदलाव दिखते हैं.... बिल्कुल हर तरफ... चाहे वह पति में हों, समाज में आए हों, यहाँ तक कि पिछली अगली पीढ़ी में भी... पति भी अब मुख्य 'हेल्पिंग हैण्ड' बनकर उभरे हैं, माता-पिता.... यहाँ तक कि बच्चे भी अब समझदार, समर्थक और सहयोगी की भूमिका में आगे आए हैं... लचीलाचन आया है समाज मे.. डेफिनीटली'।''

अत: जरूरी है कि स्त्री शिक्षा एवं करियर के साथ इनके सशक्तिकरण में समानांतर रूप से परिवार, समाज, जीवनसाथी इन सभी के दृष्टिकोण व व्यवहारों को भी अध्ययन किया जाए, जिससे स्वस्थ, सापेक्षिक एवं समानांतर जेंडर संबंधी समीकरण व्यक्त किए जा सकेंगे।

परिणाम

समस्त केस-विवरणों के विश्लेषणोपरांत आरंभिक जीवन अनुभवों और सामाजीकरण के अध्ययन में अन्य शोध परिणामों के समानांतर ही यह स्पष्टत: पाया गया कि, परिवार-समाज और सांस्कृतिक परिवेश में निहित संरचनाएँ स्त्रियों की आरंभिक जीवन, सामाजीकरण, आशाओं, भूमिकाओं और व्यवहार को सुनिश्चित करने और आकार प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं (फेकनर, 2013; ब्रैनन, 2017; भसीन,1993 ; चानना,1988)। इसके साथ ही यह भी पाया गया कि भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ के पुरुषप्रधान और पितृसत्तात्मक विचारों वाले परिवेश में नि:संदेह ही स्त्री शिक्षा, करियर और भूमिकाएँ भी व्यापक रूप में प्रभावित हुई है (हजारिका, 2011; वाघमोड एवं कल्याण, 2014)जिससे विगत दशकों में प्रचलित शिक्षा, आर्थिक सक्षमता, नारीवादी चेतनाओं के प्रभाव एवं वैश्वीकरण आदि कारको ने स्त्री को शिक्षा, करियर और आत्मनिर्भरता के प्रति सजग एवं सक्षम बना उसके सशक्तिकरण में मुख्य भूमिका निभाई है (हजारिका, 2011; हबीब व अन्य, 2019; कबीर, 1999), जिससे वह नवीन जेंडर अस्मिताएँ सृजित करने की ओर अग्रसर हुई है। महत्वपूर्ण यह है कि, इस पूरी प्रक्रिया में शिक्षा मुख्य भूमिका निभाते हुए 'पावर-टूल' सिद्ध हुई है, जिससे स्त्री-सशक्तिकरण को बल मिला है (सुन्दरम एवं सुब्बुराज, 2019; एन्जिडा, 2021; भट, 2015; ग्राहम एवं लॉयड 2015; नौरीन एवं खालिद, 2012)।

लेकिन अभी भी, परंपरागत मानसिकता और सांस्कृतिक संदर्भ वाले पितृसत्तात्मक समाज ने इस आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण की प्रक्रिया में स्त्री के समक्ष अनेक दुविधाओं, अस्मिता संकट और समायोजन संकटों को भी उत्पन्न किया है, जिससे स्त्री जूझती दिखाई देती है (देसाई व अन्य, 2011)। लेकिन अध्ययन में उनके वर्तमान अनुभवों की पड़ताल से सकारात्मक रूप में यह भी पाया गया कि, पाश्चात्य देशों के समान ही भारतीय संदर्भ में भी बदलाव आए हैं। चूँकि सामाजिक-परिप्रेक्ष्य में प्रत्येक संबंधों में निहित पारस्परिकता और अंर्तक्रियात्मकता के सिद्धांतोनुरूप, जब भी किसी एक पक्ष, व्यक्ति या स्थिति में बदलाव आते हैं, तो उसके सापेक्ष ही दूसरे पक्ष के भी भूमिका, व्यवहार व स्थिति में भी परिवर्तन होते हैं (टर्नर, 2014)। अत: केस अध्ययनों में भी स्पष्टत: पाया गया कि, स्त्री-जीवन अनुभवों में आए बदलावों ने सापेक्षिक रूप से पुरुष, परिवार व समाज की मानसिकता व व्यवहार में भी परिवर्तन किए हैं (किमेल, 1987)। जिसके फलस्वरूप पुरुष अब पितृसत्तात्मक समाज के रूढ़िवादी पुरुषत्व से अलग, एक लचीले व्यवहार को व्यक्त करता दिख रहा है। जो यथासंभव अपने जीवनसाथी (पत्नी) का समानांतर साथी, सहयोगी बनकर उभरा है (मुन एवं चौधरी,2016), जो घरेलू कार्यों में हाथ बँटाने के साथ ही बच्चों की देखभाल में भी सक्रिय भूमिका निभा रहा है। इस तरह वह विविध शोध अध्ययनों में वर्णित 'न्यू फादर' (किमेल, 1987) की संकल्पना को पूर्ण करता दिख रहा है। जिसके फलस्वरूप स्त्री-पुरुष अस्मिताएँ इन रूपांतरित भूमिकाओं से नवीनत: आकार लेती दिखती हैं। साथ ही स्त्री अपनी अस्मिता पर गर्वित व आनंदित महसूस करती दिखती है। एक और महत्त्वपूर्ण प्रभाव जो इस समस्त प्रकरण में दिखता है, वह है पीढ़ीगत प्रभाव। जो विभिन्न शोध अध्ययनोंनुरूप ही यह परिणाम व्यक्त करता है कि कामकाजी और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर स्त्री के परिवेश में भावी पीढ़ी (बच्चों) ही नहीं बल्कि पिछड़ी पीढ़ी (माता-पिता) को भी ज्यादा स्वीकृतिपूर्ण और सामान्य सहयोगी बनाने के साथ ही आत्म-निर्भर होने को भी प्रेरित किया है (गोविल, साहू एवं अन्य,2024)। स्पष्ट है कि नारी सशक्तिकरण की प्रक्रिया से केवल स्त्री जीवन अनुभव व संदर्भ ही नहीं बदले हैं, बल्कि सापेक्षिक रूप से परिवार, परिवेश, समाज, संस्कृति, सामाजीकरण, मानसिकताएँ और संबंधों के स्वरूप भी बदले हैं । अत: इसे 'बहुआयामी प्रक्रिया' (कबीर, 1999; कोले, शेषाद्री एवं अन्य,2021) के तौर पर स्पष्टत: विवेचित किया जाना सर्वथा उपयुक्त प्रतीत होता है।

अन्तत: **निष्कर्ष** रूप में कहा जा सकता है कि, 'नारी सशक्तिकरण' को शिक्षा, करियर एवं आर्थिक-आत्मनिर्भरता मात्र के संकुचित आशयों से समझने की बजाय इसके व्यापक प्रभावों से संबद्ध रूप में देखा जाना सर्वथा उपयुक्त है रोलैण्ड, 1997; कबीर, 1999; और बाटलीवाला, 1993 के शब्दों में 'सशक्तिकरण' के आशय केवल स्त्री द्वारा या स्त्री के लिए किया गया सशक्तिकरण ही नहीं है, बल्कि इसका व्यापक आशय तब है, जब स्त्री अपनी अंतनिर्हित शक्ति को पहचानकर अन्य महिलाओं के साथ मिलकर, शक्ति-साझेदारी के साथ अन्याय व असमानता के खिलाफ एक ऐजेंट की तरह कार्य कर सकें, यही सही मायनों

में सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन के लिए 'शक्ति' रूप में कार्य करेगा। अत: जरूरी है कि स्त्री-सशक्तिकरण को संकुचित संकल्पना से परे नवीन विस्तृत अवधारणाओं के समेकित अंर्तक्रिर्यात्मक रूप में समझा जाए।

➢ **References :-**

1. Batliwala, S. (1994). The Meaning of Woman's Empowerment : New Concepts from Action. In *Population Politics Reconsidered : Health, Empowerment, and Rights.* Sen. G. Germain A, Chen LC (eds.) Harward Center for Population and Development Studies : Boston.
2. Batliwala, S. (2007). Taking the power act of empowerment : An Experimental Allant. *Development in Practice 17*(415): 557-65.
3. Beaman, L., Duflo, E., Pande,R., Topalova,P.(2012). Female leadership raises aspirations and educational attainment for girls: A policy experiment in india. *Science.335*(6068):582-586.
4. Bhasin, K.(1993).*What is patriarchy?* India: Kali for women.
5. Bhat, R.A. (2015). Role of Education in the Empowerment of Women in India.*Journal of Education and Practice,* 6(10). ISSN 2222-288X (Online).
6. Bi, Fatima (2016). Women Empowerment through Employment Opportunity in India.*The Right, I*I(i). ISSN : 2454-9096 (online).
7. Brannon.L. (2017).*Gender : Psychological Perspectives*. New York :Routledge.
8. Chanana, K. (1988). *Socialization ,education and women: exploration in gender identity (perspectives in indian development).*
9. Christopher Coley, SrividyaSheshadri, SriramDevnathan&Rao R. Bhavani (2021) : Contextualizing Women's Empowerment Frameworks with an Emphasis on Social Support : A Study in Rural, South India, Community, Work & Family. http://doi.org/10.1080/13668803.2021.1879021.
10. Cornwall, A. and Edwards, J. (2010).Introduction : Negotiating empowerment. *IDS Bulletin, 41*(2)
11. Corwall, A. (2016). Women's Empowerment : What works? *Journal of International Development, 28*, 342-359. (Wileyonlinelibrary.com) DOI : 10.1002/Jid.3210
12. Dandona, A. (2015). Empowerment of Women : A Conceptual Framework. *The International Journal of Indian Psychology, 2(3*).ISSN : 2349-3429. http://www.ijip.i
13. Desai,M., Majumdar,B., Chakraborty,T., Ghosh,K. (2011). The second shift: working women in India. *Gender in management: an international journal.26*(6). 432-450.
14. Engida, Y.M. (2021). The Three dimensional role of education for women Empowerment.*Journal of Social Sciences 17*(1), 32-38.
15. Govil,d.,Sahoo,h.,Chowdhry,b.& James, K.S. (2024). A qualitative perspective on working women care providers and care receivers on elder care: a study from india .*BMC Geriatrix*. 24:345.
16. Graham, E.M. and Lyod, C. (2015). Empowering Adolescent Girl in Developing Countries : The Potential Role of Education. *Policy Factures in Education, 14(5*).556-577. SAGE.DOI : 10.1177/1478210315610257.
17. Gressel, C.M., Rashad, T. and Maciuika, L.A. at.al. (2020). Vulnerability Mapping : A Conceptual Framework Towards a Concept-Based Approach to Women's Empowerment. World Development Perspectives.https://doi.org/10.1016/j.wdp.2020.100245.Elsevierltd.
18. Habib, K, Shafiq, M., Afshan, G. and Quamar, F. (2019).Impact of Education and Empowerment on Women Empowerment.*European Online Journal of Natural and Social Sciences, 8(3*).ISSN 1805-3602.
19. Hazarika, D. (2011). Women Empowerment in India : A Brief Discussion. *International Journal of Educational Planning & Administration,* 1(3).199-202.
20. Kabeer, N. (1994*). Reversed Realities : Gender Hierarchies in Development Thought*. Verso. London.
21. Kabeer, N. et.al. (2001). Discussing Women's Empowerment - Theory and Practice. Sida Studies no. 3. Anne Sisask (ed.). Stockhalm :NovamGrafiska.
22. Kabeer.N. (1999). Resource, Agency, Accidents : Reflections on the Measurement of Womens' Empowerment. *Development and Change, 30(3*) : 435-64.
23. Kimmel, M.S. (Ed.) (1987). Changing Men : New Directions in Research on Men and Masculinity. SAGE Pub. : India.
24. Kochler, D. and Rao, A. (N.D. 2015) What is Gender at Works Approach to Gender Equality and Institutional Change? Mimeo. www.genderatwork.org.
25. Modhiya, D.M. (2016). Women Empowerment in India : A Burning Issue. *International Journal of Social Impact, 1 (*2).ISSN : 2455-670X. www.ijsi.in

26. Munn,S.L. &Chaudhuri,S.(2016). Work life balance: a cross cultural review of dual earner couples in india and the united states. *Advances in developing human resourses 18*(1), 54-68.India:SAGE.
27. Noreen, G. & Khalid, H. (2012). Gender Empowerment Through Women's Higher Education : Opportunities and Possibilities. *Journal of Research and Reflections in Education, 6*(1) : 50-60. http://www.ue.edu.pk/journal.asp.
28. Rowlands. 1997. *Questioning Empowerment : Working with women in Honduras*. Oxford Publishing : Oxford
29. Sandler, J. and Rao, A. (2012) Strategies of Feminist Bureaucratic United Nations Experiences, IDS Working Paper 397, Brighton : Institute of Development Studies.
30. Sen, G. (1997). Empowerment as an Approach to Poverty, Working Paper Series 97.07, New York : UNDP.
31. Sundaram, M.S., Sekar, M. &Suburaj, A. (2014), Women Empowerment : Role of Education. *International Journal in Management & Social Science 2* (12), 76-85.
32. Turner, J.H.(2014). *Theoretical sociology: A concise introduction to twelve sociological theories.*London:SAGE.
33. Waghamode, R.H. &Kalyan, J.L. (2014). Women Empowerment in India : A Study. *Reviews of Literature, 1(7*), ISSN 2347-2723.